सागर कुमार 'दरख़्त' की कविताएँ

सलेमपुर, देवरिया, उ.प्र.
पिन – 274509
sagarkumar150100@gmail.com

नासमझी

फिसलने – गिरने के बाद ही
समझ आती हैं
ज़िंदगी की काई भरी फिसलनें...
और फिर एड़ियों में
चिपक जाता है
कुछ लिसलिसा सा...
हमेशा के लिए !

बुझी आग

जली हुई लकड़ी समान
होते हैं नाज़ुक पलों में
किए जाने वाले वादे
ज़रा सा धक्का....और बस
सब कुछ राख !

मानव प्रकृति-1

ट्रेन की
'खुली' खिड़की पर बैठकर
बाहर के नए-पुराने
नज़ारों को देखना
अद्भुत अनुभव होता है !
मन भी एक खिड़की है ।

मानव प्रकृति -2

किताब पढ़ते वक्त मेज़ पर पड़े
चाय के कप के दाग
दरअसल दाग नही हैं...
बल्कि, अतीत या भविष्य की ओर,
शब्दों की ईंधन से उड़े
चिन्तन-विमानों के, छोड़े गए
निशान हैं !

हम

मरूस्थल का मुसाफ़िर
मैं...
नज़र भर की मृग मरीचिका
तुम !

नैतिकता की राह पर एक दिन

मैं नैतिकता की राह पर चल रहा था –
परेशान, किंकर्तव्यविमूढ़ ।
गहरी धुँध छाई थी ।
ना दायाँ पता चलता था, न बायाँ !
हर कदम जैसे यंत्रचालित हो ।

तभी किसी ने मेरे सामने
केले का छिलका फेंक दिया !
मैं फिसला, और उनसे जा टकराया ।
दोनों गिरे, दोनों को चोटें आईं ।
मैंने पलटकर देखा – मैं चौंका !
'इन्हें' तो छिलका नही फेंकना चाहिए था ।
खूब खरी खोटी सुनाई मैंने,
हुए पलटवार मुझ पर भी ।
फिर जब ठंडा पड़ा मामला
तो पता चला कि भूख का उद्वेलन इतना था
कि उन्हें ध्यान न रहा था
कि सड़क पर
छिलका नही फेंकना चाहिए ।
और ये बात फेंकने के बाद ही याद आ सकी....
मैंने भी नज़रों को दोष देते हुए माफी माँग ली ।

और अब मैं खड़ा हो गया हूँ,
कपड़ों की धूल झाड़ रहा हूँ ।
सामने सड़क की धुँध भी छँट रही है
और थोड़ी देर में साफ़ हो जाएगी !

ईद

वह हर रात सब्जी बनाती
वह कहता नमक कम है !
हर सुबह उसे चाय पिलाती,
वह कहता फ़ीकी है !

आज ईद है ।
उसने सिवइयाँ बनाई थीं ।
पर कोई शिकायत नही आई !
रिवाज़ की तरह ही सही,
आज अर्से बाद दोनों गले मिले थे !

वह इशारे नही समझती !
उसे मालूम नही शायद, कि
प्यार मीठा तो होता है,
मगर मधुमेह नही देता!

एक दिन

एक दिन भूल जाएँगे हम दोनों, एक दूसरे को
परीक्षा के लिए रटे गए पाठ की तरह !

वक्त घोंट देगा गला
"मैं तुम्हें छोड़कर जी नही सकूँगी"
जैसी बेतुकी बातों, और
"तुम्हें ज़िन्दगी भर दिल में रखूँगा"
जैसे छिछले वादों का ।
वे चीख भी नही पाएँगे,
और शांति से, हमारे अस्तित्व के कब्रिस्तान में
दफ़ना दिए जाएँगे...
बिलकुल हमारे 'रिश्ते' की तरह !

एक दिन भूल जाएँगे हम दोनों, एक दूसरे को
परीक्षा के लिए रटे गए पाठ की तरह !

तब सिर्फ एक 'पंछी' उड़ता रहेगा
हमारे मन के आकाश में
दिख जाया करेगा गाहे बगाहे कहीं पास में
(या शायद वह भी नही !)
तब, कभी मिलन हो जाने पर
वे बातें-वादें लेंगे उखड़ी उखड़ी साँसें
वह पंछी आकर बैठ जाएगा छज्जे पर
(या शायद वह भी नही !)
मन होगा लौट चलें पीछे, होकर रूँआसें
और खोल कर रख दें खुद को हम
पर "दूसरा कहीं 'दूसरा' जन्म ले चुका हो तो..."
की आशंका में रोक लेंगे कदम
खुद ही मार देंगे हम पत्थर
छज्जे की दिशा में और
बैठ जाएँगे उन बातों-वादों के सीने पर !

यकीनन मैं तुम्हें पनाह-ए-दिल में
रखना चाहता हूँ ज़िन्दगी भर
और शायद तुम भी मुझे अपनी धड़कने
बनाए रखना चाहती हो, मगर
यकीन करो मेरा...
एक दिन हो जाएँगे हम ओझल-से
एक दूसरे के जीवन-पटल से
हवा में उड़ते जहाज की तरह...!

एक दिन भूल जाएँगे हम दोनों, एक दूसरे को
परीक्षा के लिए रटे गए पाठ की तरह !